इतिहास

हम महालेखाकार उत्तर-पश्चिमी प्रांत एवं अवध, आगरा के उत्तराधिकारी हैं। तत्कालीन महालेखाकार श्री जी0 लशिंगटन ने अक्टूबर, 1862 में इस कार्यालय को इलाहाबाद स्थानांतरित किया था। उन दिनों रेलवे की सुविधा न होने के कारण रिकार्ड आदि नावों द्वारा लाए गये थे।

2. 1अप्रैल, 1926 से महालेखाकार संयुक्त प्रांत एवं अवध के नाम से जाना जाने वाला यक कार्यालय संयुक्त प्रांतो के लेखा परीक्षा निदेशक का कार्यालय कहलाने लगा, एक प्रकार से उस समय लेखा कार्य का पृथक्कीकरण किया गया था। प्रांतीय सरकार के मुख्य लेखा अधिकारी ने लेखा कार्य का उत्तरदायित्व स्वयं ले लिया, संयुक्त प्रांत में केन्द्रीय लेनदेनी के लेखाकरण हेतु केन्द्रीय लेखा कार्यालय के प्रभारी अधिकारी की भी नियुक्ति की गई। भारत सरकार के वित्त विभाग में विशेष कार्याधिकारी के नियंत्रण में 24 जनवरी, 1927 को वेतन एवं लेखा अधिकारियों के एक पृथक संवर्ग का निर्माण किया गया।

3. पॉच साल की लघु अवधि में यह प्रयोग असफल सिद्ध हुआ और एक नवम्बर, 1931 का महालेखाकार संयुक्त प्रांत का कार्यालय अस्तित्व में आया। 30 जनवरी, 1950 से "यू0 पी0" का अर्थ युनाईटेड प्राविसेज (संयुक्त प्रान्त) के स्थान पर "उत्तर प्रदेश" हो गया।

4. एक नवम्बर, 1971 को कार्य के आधार पर कार्यालय का विभाजन महालेखाकार- प्रथम एवं द्वितीय के कार्यालयों में हो गया। एक नवम्बर, 1977 से राजस्व लेखा परीक्षा तथा व्यय में होने वाली भारी वृद्धि को दृष्टिगत रखते हुए कार्यालय को पुर्नगठित किया गया। 1972-73 से राजस्व प्राप्तियों की लेखा परीक्षा रिपोर्ट तथा 1973-74 से लेखा परीक्षा रिपोर्ट वाणिज्यिक अलग से प्रकाशित हो रही है। एक मार्च, 1984 से भारतीय लेखा तथा लेखा परीक्षा का विभाग का पुर्नगठन हुआ। जिसके फलस्वरुप कार्यालय लेखा परीक्षा एवं लेखा एवं हकदारी कार्यालयों मे विभाजित हो गया। उस समय लेखा तथा हकदारी के उत्तरदायित्व दो कार्यालयों यथा महालेखाकार (ले0 एवं हक0) -प्रथम तथा महालेखाकार (ले0 एवं हक0) -द्वितीय में विभाजित हुए। महालेखाकार (ले0 एवं हक0) -प्रथम 9 सितम्बर 1985 से प्रधान महालेखाकार के अर्न्तगत है।

5. कार्यालय एक शानदार ऐतिहासिक इमारत में स्थित है जहाँ पहले उच्च न्यायालय हुआ करता था। यह 1872 में लार्ड पील्रे द्वारा डिजाइन किए गये एक ही प्रकार के चार भवनों में से एक भवन है। ऐसा विश्वास किया जाता है कि ये चारों भवन सुरंग द्वारा जुड़े हैं।

6. सुप्रसिद्ध और सम्मानित मौलवी लियाकत अली के नेतृत्व में आजादी की पहली लड़ाई के दौरान इलाहाबाद में 1857 में अंग्रेजो को मुकाबले का सामना करना पड़ा। उन्हें चायल के जमींदारों का समर्थन प्राप्त था। अब चायल एक तहसील है जिसके भू-अभिलेखों के अनुसार हमारा परिसर इसके अधिकार क्षेत्र में है। मौखिक इतिहास के अनुसार हमारा कार्यालय वहाँ स्थित है जहाँ बहुत से भारतीय शहीद हुए। हम अपनी विरासत के प्रति सजग हैं और इस पवित्र भूमि का सम्मान करते हैं। हमारे विभाग के श्री डी० जे० घोष द्वारा बनाया इस भव्य भवन का एक रेखाचित्र इस रिपोर्ट में सज्जित हैं। इसकी भव्यता का अंकन किसी छायाकार की पहुँच से परे है।

7. हमारे कार्यालयों के लिए एक आधुनिक कार्यालय परिसर की परियोजना है। तब इस ऐतिहासिक इमारत को ऐसे उपयोग में लाया जाएगा जिससे इसकी सुरक्षा खतरे में न पड़े। इसके शटर, खिड़कियाँ तथा पार्टीशनों आदि को हटाकर इसकी मौलिक सुन्दरता को बरकरार किया जायेगा।

8. हमारे बगीचे लुभावने पुष्पों से सज्जित है। और अनेक पुराने वृक्ष है। उन पर लेबिल लगा दिए गये है तथा शाखाओं को भी काटने पर कड़ा प्रतिबन्ध है। आवश्यक समायोजन कर लिए जाएँगें। प्रकृति से बलिदान नहीं दिलाया जाएगा।